प्रकृति और जीवन

चिड़ियों का गाना
नदियों का संगीत
और पेड़ों का झूमना
सब गड्डमड्ड हो गये हैं।
दिशाएं गुम हो गयी हैं
जिन्दगी के नाटक में।
नहीं सुहाता
चिड़ियों का चहचहाना
नदियों का पानी बेस्वाद लगता है
और पेड़ों की छांह
अटपट !
क्यों लगता है ऐसा ?
दिलों के तनाव हमारे-
ये दूरियां-
शायद यही उलझन है
सुलझाना है जिसे !
लेकिन नहीं जानता
कैसे ?

अनन्त यात्रा

आगे बढ़ो !
बढ़ते रहो, आगे, और आगे !
जब तक साथ दें पांव
लेकिन क्षितिज
मंजिल नहीं है।
कोई एक मंजिल तो बस शुरुआत है
एक नये सफ़र की।

जियो,
एक भरी-पूरी ज़िन्दगी
और चुनो एक मकसद
जो दे सच्ची खुशियां
क्योंकि मरना
किसी मक़सद के लिए
बेहतर है
मरते हुए जीने से।

• **जयपुष्प**, गोरखपुर,(अंग्रेजी से अनूदित)

(1)

अभी हर तरफ धुआं-धुआं है
कभी-कहीं कोई लौ जलती है
कभी-कहीं कोई लौ बुझती है।
इस घड़ी में भी
दहकते शोलों का कारवां बढ़ रहा है
क्रान्ति-लौ को अपने में समेटे हुए
एक साथ जलने के लिए
एक साथ जलाने के लिए।

(2)

सागर चुप है
संगम पर नदियां उकसाती हैं
उसकी चुप्पी तोड़ने को।
आततायी सोचते हैं,
वे कुछ उथली बातें करती हैं
वे बातें हैं
सागर के विस्तृत अन्ततल
को छू देने वाली
उसमें क्रान्ति लाने वाली।
तमाम विरोधी शक्तियां
साजिशें रचती हैं
उसे चुप रखने की।
और नदियां, संयुक्त श्रम से
विरोध करती हैं !
सागर सब देखता है
धीरे-धीरे सब समझता है
और जब,
आततायी करते हैं इस्तेमाल
अमावस की काली रात का —
अपने आखिरी अस्त्र का
वे सोचते हैं,
उनकी विजय हो गयी।
किन्तु ;
ऐसे में ही
सागर की चुप्पी टूटती है
उसकी लहरें ऊंची उठती हैं
जो, बहुत भयंकर
ज्वार आने का संकेत देती हैं।

• **देवेन्द्र प्रताप**, नैनीताल